दिनांक :- 02-07-2020

कॉलेज का नाम : मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- नौ

प्रश्न :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन तथा प्रथम विश्वयुद्ध

तटस्थता के परिणाम :- अगस्त 1917 ई० में चीन ने एक सहयोगिया के रूप में केन्द्रीय शक्तियों के पक्ष में धुरी राष्ट्रों युद्ध की घोषणा कर दी। तबसे 1917 ई० तक वह युद्ध में तटस्थ रहा था। उसकी तटस्था की व्याख्या नकारात्मक नीति में की गई उसने युद्ध से अपने को अलग-थलग रखने का भरपूर प्रयास भी

किया था। फलतः जापान को इसके शांतुंग प्रदेश में हाथ-पाँव फैलाने का अवसर प्राप्त हो गया। इतना ही नहीं, इसने चीनी गणतंत्र के अन्य भागों में अपने हितों का विस्तार किया।

प्रथम विश्व युद्ध तो यूरोप में शुरू हुआ जिससे चीन को कुछ लेना-देना नहीं था। अतएव प्रारंभ में इसने अपने को युद्ध से अलग-थलग रखने के लिए तटस्था नीति का अवलंबन किया। किंतु इसकी तटस्थता नीति अधिक दिनों तक नहीं चली। 1914 में जब जापान ने सिंगतो (Singtao) पर अपना झंडा गाड़ दिया तो चीनी गणतंत्र के राष्ट्रपति युवान शी-कई के कान खड़े हो गए। उसने तटस्थता को तिलांजलि देकर मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में शामिल होने की इच्छा प्रकट की। युवान तो युद्ध में कूदने के लिए

तैयार था लेकिन वह महाशक्तियों के इस निर्देश को अवहेलना नहीं कर सकता था कि उसे वैदेशिक मामलों में निर्णय नहीं लेना है क्योंकि जब कभी उस ने ऐसा किया है तो विपत्ति को बुलावा दिया है। एक दूसरा कारण चीन का रिक्त राजकोष था। यह विदेशी सहायता पर जी रहा था। इसे संयुक्त राज्य अमेरिका से ऋण मिल रहा था। लेकिन इसने अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग समूह से अपना हाथ खींच लिया। जापानी कोष से चीन का पुनर्गठन किया गया। 1917 ई० के बाद उसे याकोहामा स्पेशी बैंक (Yokohama Specie Bank) से ऋण दिया जाने लगा। चीन जो विदेशी ऋण पर जी रहा था युद्ध में शामिल होने के दुस्साहस नहीं कर सकता था।

तटस्थता समाप्त करने का आंदोलन

1917 ई० तक चीन में एक भिन्न स्थिति उत्पन्न हो गई। चीन में संयुक्त राज्य अमरीका अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगा जो चीन के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ। 1917 ई० में चीन में एक आंदोलन शुरू हो गया जो संयुक्त राज्य अमरीका के मार्ग-दर्शन में चीन को युद्ध में झोंकना चाहता था। स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका तटस्थ देशों को जर्मन पनडुब्बी जहाजों को हटाने के विरुद्ध उठ खड़ा होने के लिए आह्वान कर रहा था। उसके अनुसार यह अंतर्राष्ट्रीय विधि के मान्य सिद्धान्तों का उल्लंघन एवं मानवता के विरुद्ध अपराध था। पीकिंग स्थित अमरीकी दूत ने संयुक्त राज्य के संरक्षण में चीन को इस अवसर का लाभ उठाकर एक सकारात्मक नीति अवलंबन करने के लिए प्रेरित किया।

Scanned with CamScanner

ऐसा करने पर चीन को पेरिस शान्ति सम्मेलन मे शमिल होने तथा सुदूर पूर्व जहाँ उसके हित है, कि समस्याओं के समाधान का अवसर मिलेगा चीन मे शीघ्र ही जर्मनी के समुद्री युद्ध का विरुद्ध किया तथा केन्द्रीय शक्तियों से अपने कूटनीतिक संबंध विच्छेद कर लेने की धमकी दी। प्रधानमंत्री तुवान - ची-जू (Tuan-chi-Jui) जिसकी प्रतिष्ठा अब तक काफी घट गई थी, बड़ा पशोपेश मे था। राष्ट्रपति ली (Li) भी कोई नया कदम उठाने मे सशंकित था। इसी बीच तुवान ने पद त्याग कर दिया तथा अपने घर तितसीन (Titentsin) लौट गया। राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के बिना मंत्रिमंडल का पुनर्गठन नहीं कर सकता था। अतः उसने युद्ध प्रश्न पर प्रधानमंत्री की बात मान ली जब संसद मे जर्मनी से कूटनीतिक संबंध विच्छेद का प्रस्ताव रखा

Scanned with CamScanner

गया तो चीनी सरकार ने अपार बहुमत से इसे पारित कर दिया।

चीन और संयुक्त अमरीका ने जर्मनी से अपने कूटनीतिक संबंध विच्छेद कर लिया। किंतु इससे जर्मनी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। संयुक्त राज्य अमेरीका का अनुसरण कर अन्य राज्यों ने भी जर्मनी से संबंध विच्छेद कर दिया। अब चीन युद्ध घोषणा करने पर विचार करने लगा। प्रधानमंत्री ली ने मित्र राष्ट्रों से युद्ध के लाभों को सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। लेकिन उसे पहली युद्ध की घोषणा करने के लिए कहा गया। चीन बड़ा धर्म संकट में फंस गया। वह जर्मनी से बड़ा आतंकित था। साथ ही चीन के बुद्धिजीवी भी युद्ध-प्रश्न पर अपने विचारों को बांटे हुए थे। एक प्रसिद्ध विद्वान लियांग ची चाव

(Liang chichao) ने कहा जब कभी कोई नीति निर्धारित की जाती है, तो इसका पूर्ण कार्यान्वयन होना चाहिए। यदि बीच में ही हमारे पांव लड़खड़ाने लगते हैं और आगे बढ़ने से डरते हैं तो हमारी स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। अतएव संसद और सरकार को साहसपूर्वक निर्णय लेना है और कदम उठाना है। दूसरी ओर जर्मन आतंक पर टिप्पणी करते हुए एक अन्य विद्वान कांग-यू-वेई (Kang-Yu-Wei) ने कहा मुझे इस पर कुछ नहीं एक अन्य कहना है कि युद्ध में किस पक्ष की विजय होगी। किंतु इतना तो असंदिग्ध है कि सभी यूरोपीय हथियार, संयुक्त राज्य अमरीका और जापान की औद्योगिक और वित्तीय शक्ति जर्मनी का बाल बांका नहीं कर पाई है। दूसरी ओर फ्रांस अपनी उत्तरी प्रांतों को खो चुका है।

Scanned with CamScanner